पंचम अध्याय

*** 'भस्मांकुर' का जीवन दर्शन (उद्देश्य) ***

अध्ययन, जीवनदर्शन, भावुकता एवं वातावरण से प्रभावित होकर कवि का अंतःकरण अभिव्यक्ति के लिए आकुल हो उठता है । यही आकुलता काव्यसृष्टि का मूल है । यहाँ तक की कुछ कवि अपने व्यक्तित्व को संपूर्ण मानवता तक विस्तृत कर लेते हैं । कवि जीवन और जगत् के अंतर्मन के साथ अपने व्यक्तित्व को एकरुप कर लेता है । वस्तुतः इसी वर्ग के कवियों द्वारा शाश्वत साहित्य की सृष्टि हुई है ।

एक सच्चा कवि अपने अंतरात्मा की आवाज सुनकर सृजन के लिए प्रेरित होता है । अग्नि में तपकर सोना अधिक चमकिला बनता है उसी तरह साहित्यकार सामाजिक वातावरण में रहकर समाज के गहन अनुभवों से उसका व्यक्तित्व कुंदन की भाँति तेजस्वी बनता है ।

साहित्यकार प्रकृति के गोद में पलकर उसके प्रति आकर्षित होता है । उनके मन में उमंगे उठने लगती हैं और वो सृजन के लिए प्रेरित होता है । जब उसके मन में सृजन की भावना जागृत होती हैं तभी वह काव्य का निर्माण करता है । कवि किसी उद्देश्य को लेकर काव्य का सृजन करता है । उद्देश्य के बिना काव्य लक्ष्यहिन बन जाता है । हर काव्यकृति के पीछे कोई ना कोई उद्देश्य जरुर होता है ।

कुछ समस्याएँ, कुछ घटनाएँ या कुछ आदर्श व्यक्तियों के विचारों से कवि प्रेरणा लेकर लोक जागरण, ज्ञानवृध्दि या मनोरंजन जैसे उद्देश्य को लेकर अच्छा काव्य निर्माण करता है । लेकिन कुछ काव्यकृतियाँ ऐसी भी होती हैं, जिसका कोई लक्ष्य नहीं होता । उस कृति का अध्ययन करने पर सहृदय पाठक को सच्ची आनंदानुभूति नहीं होती । इसीलिए कवि मैथिलीशरण गुप्तजी कहते हैं कि –

> "केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए ।
> उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए ।" 1

आधुनिक कवियों ने पुरानी कथाओं के माध्यम से आधुनिक खंडकाव्यों की निर्मिती की । उन्होंने काव्य का विषय तो पौराणिक लिया है लेकिन उसके मूल में आधुनिक समस्याएँ है । डॉ.एस. तंकमणि अम्मा भी चाहते हैं कि इन समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रबल कथावस्तु की जरुरत है । यह प्रबलता पुरानी कथा में हैं । इसीलिए वे कहते हैं कि – "आधुनिक काल के अनुरुप पौराणिक कथापात्रों को ढालने के हेतु उनके अलौकिक तत्वों को दूर करना आवश्यक हो गया तथा बौध्दिक एवं वास्तविक धरातल पर उनका प्रस्तुतीकरण करना आवश्यक था ।" 2

नागार्जुन एक जनकवि हैं । उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन यायावरी में बिताया है । इस लंबे सफर में उन्होंने सामान्य जनता को करीब से देखा, उनके हर सुख दुःख से परिचीत हो गये । इसीलिए उन्होंने अपने काव्य का लक्ष्य मानव बना दिया । उन्होंने अपने साहित्य में मानव के हर पहलु का चित्रण किया है ।

कवि नागार्जुन की साहित्यिक दृष्टि व्यंग्यात्मक रही हैं । जब–जब मानव–मानव पर अत्याचार करता हुआ दिखायी दिया है तभी नागार्जुन की लेखनी तेज चली हैं । उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा मानवता का दिव्य संदेश देकर सामाजिक विषमताओं पर प्रबल प्रहार किया है ।

'भस्मांकुर' एक आख्यान काव्य है । इस काव्य के रचयिता नागार्जुन स्वभावतः विद्रोही हैं । उन्होंने अपने अंदर की विद्रोही वृत्ति को सदैव रचनात्मक दिशा की ओर सक्रिय किया है । नागार्जुन के हृदय में सहज रसिकता का पता लग जाता है । किंतु इस रसिकता के पीछे एक तीखा व्यंग्य है, जो एक रुढिवादी और स्वार्थी समाज की दुर्भावनाओं को प्रकट करता है ।

अन्य कवियों की तरह कवि नागार्जुन ने 'भस्मांकुर' खंडकाव्य के लिए पुरानी कथा का चुनाव किया है लेकिन उन्होंने इस पौराणिक कथावस्तु का चित्रण नवीन परिवेश में किया है, जिससे काव्य में वास्तविकता का गुण आ जाता है ।

प्रस्तुत खंडकाव्य 'भस्मांकुर' का मूल लक्ष्य है – "पार्वती के प्रति शिवजी के मन में प्रेमभाव

जागृत करना । इस कार्य को पूरा करने से सूर-समाज की समस्या हल हो जायेगी । एक बार शिवजी और पार्वती विवाह के बंधन में बँधकर एक हो जायेंगे तो वे प्रेम के प्रतीक के रुप में एक शिशु को जन्म देंगे । जो भविष्य में सुर-समाज की आपत्ति दूर करेगा । इस महान उद्देश्य को लेकर कवि नागार्जुन ने "भस्मांकुर" की निर्मिती की । इस पौराणिक कथा में आधुनिक समस्याएँ छिपी हुई हैं ।

मूल लक्ष्य के साथ ही साथ कुछ आधुनिक समस्याएँ भी है, जिसने कवि को विचलित किया था । उसे सुलझाने के लिए कवि नागार्जुन ने 'भस्मांकुर' काव्य में एक पुरानी कथा लेकर उसके द्वारा आधुनिक विचारों का प्रभाव मानव समाज पर डाला है ।

कुछ ऐसी भी समस्याएँ होती हैं, जिसे समझाने से या कहने से नहीं सुलझती । मानव समाज को उसकी त्रुटियाँ दिखाने के लिए एक ठोस सबुत की जरुरत हैं । अगर कवि नागार्जुन ने आधुनिक कथा चुनी होती तो इतना गहरा प्रभाव नहीं पडता । इसीलिए उन्होंने शिव-पार्वती के जीवन की एक घटना को लेकर इस खंडकाव्य की निर्मिती की । इस कथा का सामान्य जनता पर गहरा प्रभाव पडा है । मानव की भगवान शिव-पार्वती पर बडी आस्था है । वे दिलेलगन से उनकी पूँजा करते हैं । अगर देवाधिदेव के जीवन की कथा ली जाए तो सामान्य जन आपने-आप आकर्षित हो जायेंगे और उन कथावस्तु का अध्ययन करने पर उनके जीवन में परिवर्तन आ जायेगा । कवि नागार्जुन भी यही चाहते हैं कि इस कथा के माध्यम उनके आधुनिक विचार जन-जन तक पहुँचे । इस कार्य में उन्हें बडी सफलता मिली हैं ।

'भस्मांकुर' काव्य में आधुनिकता :-

आधुनिक विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से कामदहनवाले पौराणिक प्रसंग को लेकर कवि नागार्जुन ने एक हजार पंक्तियों में एक लंबी कविता लिखकर उसे खंडकाव्य का रुप देकर उसका नाम 'भस्मांकुर' रखा, जो अधिक सांकेतिक है । इन नाम के बजाय और कोई नाम रखा

LIBRARY

जाता तो कुछ हानि नहीं होती लेकिन नागार्जुनजी कहते हैं कि "हानि और तो कुछ नहीं थी, हाँ आधुनिकता की दृष्टि से 'भस्मांकुर' नाम कुछ अधिक सांकेतिक प्रतीत होता है ।" 3 'भस्मांकुर' नाम से ही स्पष्ट होता है कि मृत्यु की अपेक्षा जीवन की शक्तियाँ अधिक प्रबल होती हैं । कदाचित कामदेव की पराजय में नागार्जुन को जीवन अक्षय शक्ति का आभास मिला है । रति के विलाप पर जब आकाशवाणी हुई तो उसके द्वारा आश्वस्त किया गया कि "मदन कभी नष्ट नहीं हो सकता, वह तो कामना का अक्षय केंद्र है, जिजीविषा का उत्स और सृष्टि का मूल है । इसीलिए रति तुम नाहक आत्मदाह मत करो ।" इस कथन से 'भस्मांकुर' की पुष्टि होती हैं ।

'भस्मांकुर' रचना कवि की मौलिक कवि प्रतिभा का परिचय देती हैं । यह मौलिकता कथावस्तु के विन्यास एवं विविध प्रसंगों में ही नहीं, चरित्रों के चित्रण और समूची विचारधारा में देखी जा सकती हैं । इसमें जिन पात्रों का विवेचन हुआ है, उन्हें नागार्जुन ने आधुनिक रुप में चित्रित किया है । वे पौराणिक होकर भी आधुनिक लगते हैं । डॉ. पाटील कहते हैं कि "इस काव्य के पात्र शंकर, पार्वती, रति और वसंत देवता है । उनके आचार–विचार मानवी आचार–विचारों से भिन्न होना स्वाभाविक है, पर नागार्जुन ने पौराणिक कथा की पृष्ठभूमि पर मानव रुप देने का सफल प्रयत्न किया है ।" 4

नागार्जुन ने कामदेव के पुनरुद्भव को व्यापक रुप में प्रस्तुत किया है । उसके पुनर्जीवन को रति के लिए ही नहीं, मनुष्यता की परंपरा को सृष्टि मात्र जीवित रखने के लिए आवश्यक माना है । काम का अस्तित्व है, तभी तो मानव जीवन का, प्राणीमात्र का अस्तित्व है । काम के भस्म होने का अर्थ है – मनुष्यता की वेली सूख जाना । कामदेव के व्यक्तित्व का यह नया आयाम न केवल 'भस्मांकुर' को एक नई प्राणवत्ता प्रदान करता है – उसके मूल लक्ष्य को सामाजिक और प्रगतिशील चिंतनधारा से सार्थक करता है । अंत में शिवजी के कोपानल से मदन भस्म होता है । इस प्रसंग पर कवि ने शिवजी की जय–जयकार करने के बजाय कामदेव की जय–जयकार की है ।

"जयति जयति भस्मांकुर, जयति अनंग ।
जिजीविषा के मूल, सृष्टि के उत्स
जयति जयति रतिनाथ, अजेय–अमेय
जयति जयति कन्दर्प कामनाबीज ..." 5

उपर्युक्त आकाशवाणी के द्वारा कवि के आधुनिक विचार द्रष्टव्य होते हैं कि उन्होंने देवताओं से अधिक मानव को ऊँचा स्थान दिया है और उन्होंने मानव की वंदना की है ।

पार्वती की स्वप्न चर्चा, कामदेव के अनिष्ट की आशंका से रति का खिन्न हो उठना, रति और कामदेव का पारस्पारिक वार्तालाप, मध्यस्थ के रुप में वसंत का उनके आपसी झगडों को सुलझाना आदि प्रसंगों में कवि ने आधुनिक प्रगतिशील विचारधारा का समावेश करके उन्हें नये अर्थों में प्रस्तुत किया है । नागार्जुन ने परंपरावादी कवियों की तरह पौराणिक प्रसंगों को ज्यों का त्यों ग्रहण नहीं किया है । परंपरा से अलग हटकर अपनी अलग–सी प्रतिमा बनायी हैं और 'भस्मांकुर' की पौराणिक कथा को मानवीय बनाया है ।

<u>'भस्मांकुर' में नारी संबंधी विचार</u> :

अपने व्यक्तित्व के प्रति जागृकता ही आधुनिक नारी की मुख्य पहचान रहती हैं । इसी जागृकता को सिर्फ नारी कवियों ने ही नहीं जगाया तो अनेक पुरुष कवियोंने भी अपने काव्य का विषय ऐसा ही बनाया है । 'भस्मांकुर' में नागार्जुन ने नारी पात्रों को नूतन परिवेश में प्रस्तुत करके उनके माध्यम से भारतीय नारी के चरित्र के हर पहलुओं का, उनके विविध रुपों का चित्रण किया है । रति के द्वारा एक आदर्श पत्नी का तो पार्वती के द्वारा एक प्रेमिका का और जया–विजया को अच्छी सहेलियों के रुप में चित्रित किया है । वैसे तो ये सभी पात्र पौराणिक है लेकिन उनके आचार–विचार आधुनिक है । ये पात्र पौराणिक होकर भी आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

"पार्वती की स्वप्न–चर्चा कृति का बहुत सजीव अंग है, उतना ही सजीव और सार्थक जितना

काम के भस्म हो जाने के उपरान्त रति का विलाप । ये दोन्हों प्रसंग अत्यंत मानवीय और अत्यंत मार्मिक प्रसंग है । एक प्रिय की प्राप्ति से संबंधित है, दूसरा प्रिय के बिछोह से, परंतु अपनी भिन्न भूमिका के बावजूद अपने-अपने स्तर पर, दोनों ही नारी के मन-प्राणों को सहज-साकार करते हैं । एक में नारी मन का सहज उल्लास और दूसरे में उसकी अथाह करुणा व्यंजित है । पार्वती और रति दोनों सामान्य नारियाँ है, इसलिए दोनों हमारी संवेदना की समान रुप से अधिकारिणी बनती हैं" । 6

इन्सान दिन में ख्वाब देखता है और उसे सपनों के जरिए पूरा करता है क्योंकि कुछ ऐसे भी ख्वाब होते हैं, उसे वास्तविक जीवन में पूरा नहीं किया जाता । ख्वाब-ख्वाब बनकर ही रही जातें हैं । इसीलिए मानव अपने दिल की मुराद सपनों के द्वारा पूरी करता है । यह हकिकत है कि इन्सान स्वप्न देखता है किंतु देव-देवताओं को स्वप्न देखने की जरुरत नहीं होती । उनके जी में जो भी विचार आ जाते हैं, उसे वे पलभर में पूरा कर सकते हैं । 'भस्मांकुर' की पार्वती शिव को बेहद चाहती हैं । वह सामान्य नारी की तरह स्वप्न देखती है, सपनों में शिवजी से मिलती हैं । इस प्रसंग के बारे में डॉ.प्रकाशचंद भट्ट कहते हैं कि "आज तक हमारी परंपरागत कथा-कृतियों में पार्वती ने कभी ऐसे स्वप्न नहीं देखे थे । निःसंदेह कवियों द्वारा अभी तक साहित्य में वर्णित पार्वती से नागार्जुन द्वारा 'भस्मांकुर' में उपस्थित पार्वती इस कारण से भिन्न हो गयी हैं" । 7

"रात्रिशेष में देखा अद्भूत स्वप्नः
मुझे देखकर मुसकाते हैं आप
चटुल दृगों में प्रीति गयी है व्याप
झुक-झुक सूँघ रहे हैं लीला-पद्म
शिथिल पडा मम व्रीडा-विगलित हाथ
थाम लिया है प्रिय ने फिर चुपचाप
लगी उभरने उद्दीपन की छाप" । 8

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में कवि ने पार्वती के स्वप्न के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि पार्वती देवी नहीं एक सामान्य नारी है और उसके चरित्र के द्वारा कवि ने भारतीय नारी के अंतर्मन की विवशता, घुटन, तडप तथा उसकी चाहत की यथार्थ चित्र खिंचा है । हर सुंदर युवती किसी जवान पुरुष के साथ विवाह करना चाहती है । एक बार उसने किस पुरुष के साथ विवाह करने का निश्चय किया तो उसे अपने दिल के मंदिर में बिठाकर आखरी साँस तक उसे चाहती हैं । उन स्वाभिमानी नारियों की तरह पार्वती भी शिव–मिलन का स्वप्न देखती हैं । स्वप्न में शिवजी–पार्वती के सौंदर्य से आकर्षित हुए है ।

वास्तव में पार्वती–शिव को अपनाने के लिए पूरी तरह से कोशिश करती हैं । इस कार्य में वह सफल भी होती हैं लेकिन शिव के मन में शंका उत्पन्न होने के कारण वे अपनी तीसरी आँख खोलकर तेज अग्नि के द्वारा मदन को भस्म कर देते हैं और वे खुद भी वहाँ से गायब हो जाते हैं । यहाँ पार्वती को असफलता मिलती है लेकिन वह दु:खी नहीं होती । वह फिर से तपस्या के बल पर शिव को आकर्षित करना चाहती हैं । पार्वती के अंतिम निर्णय द्वारा कवि ने इस तथ्य की ओर संकेत किया है कि आज की आधुनिक नारी पुरुष के साथ स्पर्धा में लीन है और हर कार्य में हिस्सा लेती है असफल होने पर उस कार्य से मुँह नहीं मोडती बल्कि दुबारा उसे आजमाने की कोशिश करती हैं । दिशाहीन नारी के प्रति वे कोई सहानुभूति प्रकट नहीं करतें बल्कि उनको प्रेरणा देकर जगाना चाहते हैं । इस विचारों के माध्यम से कवि ने आधुनिक युग में नारी जागरण करके उनको उनके अधिकारों का परिचय किया है ।

आज का मानव छोटी–छोटी बातों पर नाराज़ होता है, उसे थोडा–सा भी गम सहा नहीं जाता । अपने प्रिय के बिछडने पर तो इतना दु:खी हो जाता है कि उसे बयान नहीं किया जा सकता । यहीं स्थिति का चित्रण कवि ने काव्य के अंतिम प्रसंग में किया है । मदन–शिव को पार्वती के प्रति आकर्षित करने में सफल होता है किंतु शिवजी के कोपानल क भोज बनना पडता है। मदन के सुंदर शरीर का परिवर्तन राख की ढेर में होता है । जो कुछ समय पूर्व यौवन संपन्न

सुंदर कामदेव का जो श्रृंगार था अब मिट्टी में मिल चुका था । जैसे ही रति को वास्तविक स्थिति का ज्ञान हुआ, वह बार–बार अपनी छाती पीटने लगी और इसके साथ ही आँखो से लगातार आँसू बहने लगे । उसके फीके और सूखे होठोंपर उलाहने भरे शब्द थे याने वह ताने मार–मार कर प्रताप कर रही थी ।

"छलिया निकला निखिल देव समुदाय
यो ही मैं लुट गई अभागिन, हाय
मन ही मन आतंकित थी, प्राणेश" । 9

"यह तो बतला दो, हे प्राणाधर ।
रहूँ तडपती मैं अब कितनी देर
यहाँ पडे हो मदन, भस्म–प्रतिमान
दूँ भी तो क्योंकर आलिंगन दान ।
हाय, हाय, यह कैसा नियतिविधान ।
तन–भर लेपूँ, रखूँ राख का मान" ? 10

कामदेव कभी नष्ट नहीं हो सकता, नष्ट भी हो जाए तो फिर से अंकुर बनके जन्म लेगा क्योंकि कामदेव के अस्तित्व पर ही सारी जीवसृष्टि आधारित है । फिर भी रति विलाप कर रही हैं । इस प्रसंग पर दृष्टिक्षेप करने पर कवि के आधुनिक विचार दृष्टव्य होते हैं कि उन्होंने रति को एक सामान्य प्रतिव्रता नारी के रुप में पेश करके भारतीय नारी के रुप को उजाकर किया है ।

नारी जाति में स्वाभिमान के साथ अद्‌भूत त्याग का समन्वय होता है । अपने प्रिय के गौरव के लिए वह अपने सिध्दांतों का समर्पण कर देती है । इतना ही नहीं अपने पति के एक इशारे पर मिटना भी जानती हैं । पुरुष वर्ग अपने स्वार्थ के लिए उसे मानता आया है । लेकिन मानना एक तथा जानना भिन्न वस्तु है । स्त्री को बिना जाने उस पर गलत आरोप लगाए जाते हैं और उसकी

भावनाओं को ठेस पहुँचायी जाती है । पार्वती–शिव को अपनाने के लिए अपना सबकुछ त्यागकर निकली थी लेकिन उनके उद्दात्य त्याग को शिवजी नहीं जान सके ।

रति–कामदेव को बेहद चाहती है । वह हर–पल अपने पति के साथ रहती हैं, उनके सुख–दु:ख को अपना मानती हैं । उन्हें मालुम है, शिवजी एक बडे देवता है । उनके खिलाफ गलत सोचना मृत्यु को दावत देने के बराबर है । इसीलिए वह मदन को विरोध करके सावधान करना चाहती हैं । लेकिन मदन–रति को नहीं समझ सका, उल्टा उसे भला–बुरा कहने लगा । उसी समय वसंत ने मदन को नारी जाति के अंतर्मन का परिचय करवाया । वसंत कहता है कि –

"शिशु समान होती हैं नारी–जाति
मृदुमति, तरल स्वभाव, रुप–रस–गंध–
शब्द–स्पर्श के प्रति अर्पित आप्राण ।
पी जाती यह हालाहल चुपचाप
कंठ नहीं होते हैं इनके नील
खंडित होने देती अपना शील
चुकता करतीं भावुकता का मूल्य
तन–मन–धन सब–कुछ देती हैं झोंक..." । 11

उपर्युक्त वसंत के कथन के द्वारा कवि नागार्जुन ने नारी जाति के बार में अपने अनमोल विचार व्यक्त किए है । वे कहते हैं कि नारी जाति तो बच्चे के समान होती हैं, इनका स्वभाव बडा को कोमल होता है, ये तो रुप, रस, गंध और स्पर्श पाते ही हृदय से पुरुष के प्रति समर्पित हो जाती हैं । नारी में इतनी बडी शक्ती होती हैं कि वो अपने प्रिय के लिए अपना तन–मन–धन सब कुछ झोंक देती हैं । इतना ही नहीं कठिन से कठिन हालात में उपने पति को साथ देती है । जब इम्तहान की घडी आती है तब जहर का भी प्राशन करती हैं लेकिन इनका कंठ नीला नहीं होता है ।

कभी–कभी अपनी भावुकता के वशीभूत होकर अपने शील तक को खंडित हो जाने देती हैं ।

सचमुच हम निष्कर्षता कह सकते हैं कि नारी एक आदर्श देवी है, वह पूजा की लायक है, असे समाज में ऊँचा दर्जा होना चाहिए । उसमें वे सभी गुण है, जो अपने परिवार के साथ अपने देश का भी नाम ऊँचा करेगी । संक्षेप में हम कह सकते हैं कि 'भस्मांकुर' काव्य नारी के नारीत्व को और पत्नीत्व की गरिमा को उजागर करता है ।

<u>लोक–हित की भावना</u> :–

मनुष्य को सिर्फ अपने हित की चिंती नहीं करनी चाहिए बल्कि समस्त जग के हित की चिंता करनी चाहिए । क्योंकि औरों की सेवा करने से दिल को सकुन मिलता है । इन्सान को कुछ ऐसे कार्य करना चाहिए, जिससे औंरो को तकलिफ पहुँचने के बजाय, उन्हें शांति मिलें ।

मूलतः नागार्जुन एक जनकवि है । उन्होंने मानव को अपने साहित्य का केंद्र बनाकर मानवता का दिव्य संदेश दिया है । उन्होंने संसार के हर पहलु का अध्ययन करके अपने संपूर्ण साहित्य के माध्यम से मानव के हर कमजोरियों को पेश करके मानव जाति में लोकसंग्रह की भावना जगायी हैं ।

'भस्मांकुर' काव्य निमार्ण करने के पीछे नागार्जुन का उद्‌देश्य था– लोक–हित । लोक–हित की दृष्टि से 'भस्मांकुर' काव्य अत्यंत उपयुक्त है क्योंकि इस काव्य के उद्‌दात्य त्यागी कामदेव ने लोक–हित के लिए अपने प्राण त्यागकर सामान्य जन के सामने अपने चरित्र का आदर्श रखा है । तारकासुर नामक महाबली राक्षस सुर–समाज को परेशान कर रहा था । सुर–समाज पर आयी आपत्ति को दूर करने की जिम्मेदारी इंद्र ने मदन पर सौंप दी । मदन ने लोक कल्याण के लिए अपने दोस्त वसंत और रति की सहाय्यता ली । वसंत ने प्रकृति रुपी नारी को हरित श्रृंगार से सजाया । प्रकृति के रुप को देखकर कामदेव को वसंत के कार्य में अब लेशमात्र भी संदेह नहीं रहा । उनके मन में अभिलाषा उत्पन्न हुई कि अब शिव की तपस्या भंग होगी और पार्वती के प्रति उनके मन में मोह अवश्य जागृत होगा । आगे कामदेव सोचने लगता है कि –

LIBRARY

"गौरी–नंदन, शिव का औरस पुत्र

वहीं करेगा तारक का संहार

सुर–समुह की चिन्ता होगी दूर" ।

"सुखी रहे अपना वह देव समाज

अपनो के हित आऊँ यदि मैं काम

समझुँगा, सार्थक है अपना नाम" । 12

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों के माध्यम से नागार्जुन ने अपनी लोक–हित की भावना अभिव्यक्त की हैं । तारकासुर जैसी आपत्ति को दूर करने के लिए समाज में कामदेव जैसे वीर निर्माण होने चाहिए, जो समाज के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करें । अपनों के हित आऊँ यदि मैं काम" कामदेव के इस कथन से ही स्पष्ट होता है कि दूसरों के दु:खों को दूर करने में ही अपना नाम और जीवन सार्थक हो जाता है ।

इस प्रकार नागार्जुनजी ने पौराणिक कथा के माध्यम से सुर–समाज पर आयी आपत्ति के द्वारा आज के समाज की हालत और उसकी दयनीय स्थिति का अंकन किया है । वे चाहते हैं कि समाज में कामदेव जैसे समाजसुधारक निर्माण होने चाहिए और उनके दिल में समाजप्रेम और देशप्रेम की भावना ओत–प्रोत भरी हुई होनी चाहिए, तभी हमारे देश का भविष्य उज्वल और आमन से भरा हुआ होगा ।

<u>काम का महत्त्व</u> :–

सभी प्राणियों के जीवन में काम की अनिवार्यता है । "काम" के बिना जीव की पुन: सृष्टि होना असंभव है । काम सृष्टि का मूल होने के कारण वह एक सार्वजनिक और सार्वकालिक प्रवृत्ति है । कामभावना या यौन भावना को दबाने से मन विकृत बन जाता है, इसीलिए मन तृप्ति के लिए काम की आवश्यकता होती हैं । काम एक मानसी शक्ति होने के कारण भारतीय साहित्य में इस पर

गहरा अध्ययन किया है ।

"भस्मांकुर" काव्य के मुख्य पात्र है– कामदेव और रति, और काव्य का मुख्य लक्ष्य है– शिवजी के मन में प्रेमभाव जागृत करना । इससे स्पष्ट होता है कि नागार्जुनजी ने प्रस्तुत काव्य में "काम" को विशेष महत्व दिया है । उन्होंने पौराणिक "काम" को नये संदर्भो में पेश किया है । "काम" एक ऐसी भावना है जो सभी जीवसृष्टि के लिए आवश्यक है । बडे–बडे त्यागी ऋषी–मुनि भी इसीसे छुटे नहीं, वे भी काम भावना से विचलित हुए है । शिवजी भी इससे छुटकारा पाने के लिए हिमालय पर तपस्या करने गये थे किंतु पार्वती के अपूर्व सौंदर्य ने उनको पिघलाकर प्रेम–भाव को जागृत किया । वे भी तपस्या को अधुरी छोडकर पार्वती के प्रति आकर्षित हुए ।

काव्य प्रारंभ में ही कवि ने प्रकृति को हरित अलंकारों से सजाया । ऋतु के अचानक बदल से प्राणियों की विरान जिंदगी में फिर से बहार आयी । वे उछलना–कूदना भूलकर प्रेम में मग्न हुए –

"विव्हल हिरणी मान गयी मनुहार
बदल–बदलकर सींग, हरिण उत्कर्ण
खुजलाता है उसका ग्रीवा–मूल
रोम–रोम से टपकाता है प्यार
असमय हरिणी गयी उछलना भूल
नेत्र निमीलित अंग–अंग बेभान
नासापुट को मिला गंध–संधान
मगन हो रहे बेचारी के प्राण" । 13

यहाँ कवि के "काम" विषयक विचार द्रष्टव्य होते हैं । प्रकृति काम की प्रेरणा सभी प्राणियों को देती हैं । मानव ही नहीं सभी जीव "काम" का आस्वाद लेते हैं । उन्हीं आस्वाद से नयी जीव सृष्टि की उत्पत्ति होती हैं । काम की इतनी जरुरत होने पर भी शिव ने कामदेव को नष्ट कर

दिया । इसका मतलब यह हुआ कि उन्होंने काम भावना को दमन कर दिया । लेकिन दमन करने से मनुष्य की मनोवृत्ति बिगड जाती हैं । इसीलिए काम का भोग लेना ही चाहिए, इसीसे मनुष्य के मन में कोई कुंठा नहीं रहती और उसके व्यक्तित्व का विकास हो जाता है । डॉ.एन.डी. पाटील कहते हैं – "काम एक स्वाभाविक वृत्ति है । उसका दमन मानव जाति के लिए कल्याणकारी नहीं हो सकता । सारी सृष्टि का विकास काम प्रक्रिया पर आधारित है । मानव ही नहीं पशु–पक्षी, जीव–जंतु यहाँ तक की पेड–पौंधे भी इसी प्रक्रिया से विकसित होते हैं" । 14

कामदेव को अमरता का वरदान मिलने के कारण वह कभी नष्ट नहीं हो सकता । उन्हीं के द्वारा सभी सजीव सृष्टि को कामुकता की प्रेरणा मिलती हैं । कामदेव के बिना शिव–पार्वती का मिलन भी असंभव है । इसीलिए कवि ने उसकी अनिवार्यता को महत्त्व देकर आकाशवाणी के द्वारा स्पष्ट कहा है कि –

"जिजीविषा के उत्स, सृष्टि के मूल ।
जयति जयति कन्दर्प, अजय–अमेय ।
कौन, मदन, तुमको कर सकता नष्ट" । 15

"पनपेगा तेरा पति अपने आप
संग–सुखों में मदन आएगा याद–
मथित करेगा प्रभु के मन–मस्तिष्क
सच, मनोज है सर्वाधिक दुर्दान्त
सच, मनोज है सर्वाधिक जीवंत
भस्म हुआ है बाहर–बाहर ठीक
पर, वो तो है प्राणिमात्र में व्याप्त" । 16

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम निष्कर्षता कह सकते हैं कि मानव जाति की वेली हरभरी

रहने के लिए नागार्जुन ने "काम" प्रवृत्ति को विशेष महत्त्व देकर उसकी अनिवार्यता पर जोर दिया है

विज्ञान संबंधी विचार :-

मनुष्य का बौध्दिक विकास इतना हुआ है कि उसने विज्ञान के बल पर प्रकृति के सभी रहस्यों को ज्ञेय बना लिया है । इसीलिए वह प्रकृति का शासक बन गया है । लेकिन जितना बौध्दिक विकास हुआ है उतना हृदय–पक्ष का हुआ नहीं । उसका हृदय–पक्ष दुर्बल पड गया है । इन्सान तभी परिपूर्ण हो सकता है जब उसके मस्तिष्क और हृदय का समुचित समन्वय हो । आज का मानव मस्तिष्क के बल पर अपनी उन्नति करने के प्रयत्न में लगा हुआ है । उसने अपनी मानवता को तिलांजली दी है और वह बुध्दि के पाश में विवश होकर इतना बँध गया है कि वह अपनी दिशा खो बैठा है । उसने विज्ञान के द्वारा सुखी संसार को विध्वंस करके उनके ऊपर अपना राज स्थापित करना चाहता है ।

मनुष्य के विद्रोही रुप को और आज की दुनिया की हालात को देखकर उसके प्रति नागार्जुन के हृदय में विद्रोह पैदा हुआ है । 'भस्मांकुर' काव्य के माध्यम से नागार्जुन मनुष्य की खुदगर्जी को मिटाकर मानव में मानवता जगाना चाहता है । उन्होंने मदन के कार्य के द्वारा दुनिया को वास्तविक सुख और शांति की पहचान करवायी हैं । संकट ग्रस्त सुर–समाज का जीवन आनंदित बनने के लिए मदन ने जी–जान से कोशिश की । अगर वो चाहता तो पलभर में सारी दुनिया को वासना के गर्त में फँसाता लेकिन ऐसा कुकर्म करने में उसका जमीर साथ नही देता । वह तो सदा दूसरों के भले की बात सोचता है । तारक नामक राक्षस का खात्मा करने के लिए एक अच्छे सेनापति की जरुरत थी, और वो सेनापति शिव–पार्वती के मिलन के द्वारा ही मिल सकता है । इसीलिए उन्होंने शिव के दिल में बहार लायी लेकिन शिव ने उसके हृदय और सत्कार्य को जाना नहीं बल्कि उन्होंने अपने मस्तिष्क के द्वारा मदन को भस्म कर दिया । मदन को भस्म की ढेर में देखकर रति विलाप के द्वारा शिव को भला–बुरा कहने लगी" ।

"कौन लक्ष्य था, कैसा शर-संधान
कहाँ हुए प्रलयंकर अंतर्धान ?
सच, क्या थे वह शंकर मंगलमूर्ति ?
सच, क्या थे वह करुणा के अवतार ?
जप-तप-संयम, था क्या सारा ढोंग ?
कुसुम-सुकोमल-प्रतिपक्षी पर, हाय
बरसा दी उसने सौ मन बारुद ।
कंठ नील था, दिल भी था क्या स्याह" । 17

रति विलाप के द्वारा कवि कहता है कि, "वास्तव में शिव कल्याण करनेवाले देवता या दया के अवतार नहीं थे क्योंकि दयालु और कल्याण करनेवाले दूसरों की बरबादी नहीं करते । शिवजी का जप-तप-संयम आदि सब ढोंग था । उनके पास हृदय नाम का कोई चीज ही नहीं, अगर उनके पास हृदय होता तो उन्होंने फूल से अधिक कोमल मदन पर सौ मन बारुद नहीं बरसायी होती । उनका कंठ जितना नीला था उतना उनका अंतर्मन भी काला था । यदि उनका मन काला नहीं होता तो वे ऐसा दुष्कार्य कदापि न करते" । नागार्जुन के इन विचारों में आज के विज्ञान की झलक नजर आती हैं । इस दुनिया में अमरिका जैसे बडे-बडे राष्ट्र है, जो विज्ञान के बल पर छोटे-छोटे राष्ट्रों को कमजोर करके उनपर अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहते हैं । डॉ.प्रकाशचंद भट्ट कहते हैं कि 'भस्मांकुर' में कामदेव जैसे सुकोमल प्रतिपक्ष पर शिव जैसे प्रबल पराक्रमी को प्रहार करता देख लगता है कि कवि के मस्तिष्क में विश्व के शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा कमजोर देशों पर किये जा रहे आक्रमणों की स्मृति भी उभर रही हैं । यहाँ शिव माध्यम हैं, कवि का स्पष्ट संकेत अमेरिका जैसे आक्रमक राष्ट्रों की ओर प्रतीत होता है, जो विएतनाम जैसे छोटे से राष्ट्र को कुचल रहे हैं । 18

विज्ञान का इस्तेमाल अगर सही जगह हो जाए तो हर खुषी हमारे कदमों में होगी किंतु दुःख की यह बात है कि आज का मानव विनाश की ओर कदम बढा रहा है । वह दूसरों की तरफ

नफरत से देखते हैं । प्रत्येक देश अपने पास स्फोटक पदार्थ रख रहा है । वे सब एक-दूसरों को बरबाद करने पर तुले है । इन स्थिति को देखकर ऐसा महसूस हो रहा है कि उन सब को हृदय ही नहीं है । वही स्थिति शिव की हुई है । उन्होंने सिर्फ मस्तिक के बल का ही इस्तेमाल किया है, उनकी नजर हृदय-पक्ष की ओर गयी ही नहीं । अगर उनके हृदय और मस्तिष्क का समन्वय हो जाता तो वे मदन जैसे सुकोमल प्रतिपक्ष पर बारुद-सा प्रहार करने के बजाय कुकर्मी तारकासुर पर करते ।

विज्ञान की महत्ता इसी में है कि उसका सही सदुपयोग होना चाहिए, तभी दुःखियों के दुख दूर हो जायेंगे और दुनिया में एकता स्थापित हो जाएगी । विज्ञान का सदुपयोग किया जाए तो मानव में मानवता जागृत होकर संपूर्ण दुनिया सुख और शांति से परिपूर्ण होगी ।

संक्षेप में हम कह सकते हैं के, सचमुच मनुष्य के विकास के लिए मस्तिष्क का ज्ञान ही नहीं, हृदय की सुकोमल भावनाओं की आवश्यकता है ।

<u>प्राचीन रुढियों तथा पाखंडों के प्रति अनास्था</u> :-

विदेशी लोग विज्ञान के बल पर अगणित प्रगति कर रहे हैं । लेकिन भारत देश में ऐसी कुछ रुढियाँ, परंपरा, धार्मिक आडंबर तथा पाखंडी लोग है, जो भारत देश का नाम ऊँचा करने के बजाय उन्हें नीचले स्तर की ओर ले जा रहे हैं । वर्तमान युग की इस स्थिति से आज के कवि नागार्जुन ऊब गये है । उन्होंने 'भस्मांकुर' काव्य के माध्यम से उन गली-सडी विचारों का पर्दा फाश किया है । "मानवता ही एक धर्म" मानकर उन्होंने मानवता का संदेश दिया है ।

प्राचीन काल से हमारे देश में जाति-पाँती, धार्मिक आडंबर तथा गली-सडी रुढियाँ चली आ रही हैं, जैसे कि बालविवाह, सती-प्रथा, बली प्रथा आदि । उन सब के प्रति कवि ने अपना आस्थावादी दृष्टिकोन अभिव्यक्त किया है ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

आनेवाली नस्लों के सामने आधुनिक सुधारवादी दृष्टिकोन रखने के लिए कवि कुछ ऐसा इतिहास चाहता है कि जिससे उन्हें प्रेरणा मिलें । लेकिन समाज में विवाह जैसी सामाजिक आवश्यकता में भी बहुत सी समस्याएँ है । प्राचीन काल से ही अनमेल विवाह प्रथा चली आ रही हैं । इस प्रथा से न जाने कितनी छोटी–छोटी लडकियाँ विधवा बनी हैं । उनकी आशा–आकांक्षों को बली चढाया है । युवती को अपने पसंद का वर चुनने की स्वतंत्रता नहीं है । वर का चुनाव तो घर के बुजुर्ग ही करते हैं । चाहे वह बूढे या रोगी क्योंन हो लेकिन उनके साथ विवाह करके जीवन व्यापन करना ही पडता है । अगर कोई लडकी विरोध करना चाहती हैं तो उस पर जुल्म ढाये जाते हैं । कुछ युवतियाँ अपने पसंद का साथीदार चुनकर उनसे विवाह करना चाहती हैं लेकिन समाज उनकी पसंद या चाहत को मान्य नहीं करता बल्कि उनकी पसंद को ठुकरा देता है । समाज के इस आचार–विचारों से उबकर, उनपर नागार्जुन कडा व्यंग्य करता है । उन समस्या पर प्रकाश डालने के हेतु नागार्जुन ने 'भस्मांकुर' की निर्मिती की है ।

'भस्मांकुर' काव्य की पार्वती तरुणी है, वह जवान शंकर का स्वप्न देखती हैं । लेकिन "भस्मांकुर" में शिव तरुण मनोहर रुप में नहीं, एक बूढे के रुप में हमारे सामने आते हैं । वैसे तो प्रत्येक तरुणी अपना वर तरुण ही चाहती हैं । यहाँ कवि की मौलिक उद्‌भावना हो सकती हैं, पर पुरुष वर्ग की प्रावंचनाओं को प्रदर्शित करने की दृष्टि से कवि ने प्रकट किया है कि देवताओं का स्वार्थ शिव–पार्वती के परिणय से ही पूर्ण होगा । इस अनमेल विवाह को संपन्न करने से देवताओं की चिंता तो पूरी होगी लेकिन पार्वती के साथ अन्याय हो रहा है, यह वे नहीं जानते । पार्वती का वृध्द शिव के साथ अनमेल विवाह रचाना क्या न्याय संगत था ? यह बात देव–देवता मदन, वसंत या सुर–समाज को बुरी नहीं लगी, लगी तो सिर्फ रति को । उसने अपने पति कामदेव और वसंत को धिक्कारते हुए कहा कि –

मुझको तो प्रिय, लगता है बेकार
सारा नाटक । आखिर वह सुकुमारि

क्यों बूढे को करने लगी पसंद ?

क्या अनमेल समागम है अनिवार्य ?

सुर–समाज की बुध्दि हो गई भ्रष्ट ।

करते हैं कैसे–कैसे खिलवाड

बस यों ही ये ब्रम्हा–विष्णू–महेश... । 19

यहाँ कविने रति के विचारों में अपने आधुनिक विचार अभिव्यक्त किये है । वे चाहते हैं कि प्राचीन रुढियों को तोडना चाहिए । आज युग बदल रहा है, इस बदलते युग के साथ बदलना चाहिए । स्वतंत्र भारत के हर मानव को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए । उन पर पुराने विचारों का बंधन नहीं होना चाहिए। अगर पुरानी रुढियों का पालन करते रहेंगे, तो न जाने कितनी नारियों को दुख भुगतना पडेगा । उनका जीवन किडे–मकुडे की तरह ही हो जाएगा । इसीलिए कवि बेमेल विवाह का कडा विरोध कर रहा है । "भस्मांकुर" काव्य में चित्रित नागार्जुन के उपर्युक्त विचारों से सहमत होकर डॉ.राजपालजी कहते हैं कि, "काम–रति एक सुखी परिवार के प्रतीक स्वरुप है । पति–पत्नी का परस्पर चिंतन साम्य, आयु अनुपात अपेक्षित है । बेमेल विवाह अधिक समय तक नहीं चल पाता । प्राचीन काल से अब तक ऐसी कितनी कहाँनिया प्रचलित है–सुनने, देखने में आती हैं । प्रायः किशोरी, तरुणी को प्रौढ या वृध्द से संबंध में आबध्द कर दिया जाता है – इसके मूल में धन–लालसा हो अथवा विवशता । परिणाम एक जैसा होता है, क्योंकि, काम चेतना कभी भी हावी हो सकती हैं – परिणाम अनैतिक एवं अनष्ठि कर हो सकता है । इसलिए नागार्जुन ने इस बेमेल विवाह संबंधी का अप्रत्यक्ष तिरस्कार किया है ।" 20

प्राचीन काल में अल्प आयु में ही लडकी का विवाह किया जाता था । नवविवाहित नारी अपने पाँव पर खडी होकर सभँलना चाहती थी तभी उसके वृध्द पति की मौत हो जाती थी और उन्हें अपने पति के साथ सती हो जाना पडता था । इतना क्रूर, भयानक इतिहास सामने होकर भी आज का मानव अपनी स्वार्थी–वृत्ति, धन–लालसा तथा प्रतिष्ठा के लिए अपनी अल्प आयुवाली लडकी की

शादी किसी बडे दौलतवाले वृध्द, रोगी या हिंसाचारी मानव के साथ करते हैं । इसका परिणाम जल्द ही भुगतना पडता है । वो नारियाँ अपनी भावी जीवन में खुष नहीं रहती । वे एक तो निराश होकर, विवश होकर घुट–घुटकर जीवन बिताती है या अपने जीवन का अंत कर देती है । इसीलिए रति के माध्यम से शिव–पार्वती के अनमेल विवाह को विरोध किया है । वे चाहते हैं कि विवाहलायक हर नर–नारी का विवाह अपने समवयस्क साथी के साथ ही होना चाहिए तभी विवाह जैसे पवित्र बंधनों का आज का मानव पालन करेगा । उनके ये मौलिक विचार सचमुच सराहणीय है ।

हमारे देश में कुछ ऐसे भी पाखंडी, ढोंगी साधु है, जो धर्म के नाम पर या ईश्वर के नाम पर ढोंग रचाते हैं । वे तपस्या का नाटक करते हैं । वे वैसे तो एकाग्र होकर तपस्या नहीं करते सिर्फ दिखावा करते हैं और अपने तपस्या का ईश्वरी ज्ञान का समाज में बोल–बाला करते हैं ।

आज का मानव अंधविश्वासू है । उन्हें मेहनत पर विश्वास नहीं है । वे मायुस होकर मुह–मायावी के जाल में फँस जाते हैं । वे पाखंडियों के पास जाकर अपनी मुराद पुरी करना चाहते हैं । लेकिन जिनके पास ईश्वर का ज्ञान नहीं, वे भला दूसरों को क्या ज्ञान देंगे । वे तो बडे–बडे ज्ञानी की तरह ज्ञान का ढोंग रचाकर उन्हें फँसाकर उन्हें लुटना चाहते हैं । इतना ही नहीं, सुंदर नारियों को अपने जाल में फँसाकर अपनी वासना को पूरी करना चाहते हैं । इन पाखंडियों से नागार्जुन परिचित है । उनके कारनामों को वे अच्छी तरह से जानते हैं । इसीलिए उन्होंने "भस्मांकुर" के माध्यम से पाखंडियों के ढोंग का पर्दा फाश किया है ।

रति अद्वितीय सुंदरी है । वह अपने पति के हर कार्य में मदद करती है । मदन–शिव की तपस्या भंग करके उन्हें पार्वती के साथ प्रणय करने के लिए मजबूर करना चाहता है । मदन और रति शिव की तपस्या भंग करने के लिए जा रहे थे तभी वसंत व्यंग्यबोध करके कहता है –

"तुम जाओ, बूढे का करो इलाज
भाभी को चाहे ले जाओ साथ

मगर इन्हें तुम रखना अपने पास
मत करना उस खूसट पर विश्वास
पकड लिया यदि शिव ने रति का हाथ
सोचो गौरी का होगा क्या हाल..." । 21

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों के द्वारा कवि ने वसंत के मुख से एक यथार्थ व्यंग्य कहकर उन आडंबरी और संत महात्मा का रुप धारण करनेवाले पाखंडियों का सच्चा रुप समाज के सामने पेश किया है । ये ढोंगी साधु लोग समाज में पाखंड फैलाकर अपनी इच्छा पूरी करते हैं । लेकिन इन्सान भ्रम में रहता है कि, साधु के रुप में ईश्वर है । इसीलिए उनकी हर मनोकामना वे पूरी करते रहते हैं और उसी में वे बरबाद हो जाते हैं । इसीलिए कवि उन पाखंडी साधुओं से बचकर रहना ही मुनासिफ समझता है ।

इस प्रकार कवि नागार्जुन ने प्राचीन रुढियों, अंधविश्वासों तथा पाखंडों को खोखला बतलाकर समाज को सुसंस्कृत बनाने की कोशिश की है ।

<u>सहयोग में अटूट विश्वास</u> :-

कवि नागार्जुन को सहयोग की भावना में अटूट विश्वास है । दुनिया का कठिन से कठिन कार्य भी एक-दूजे के सहकार्य से पूरा हो सकता है । सुर-समाज पर आयी आपत्ति को दूर करने की जिम्मेदारी इंद्रदेव ने मदन पर सौंप दी । उन्हें पूरा यकिन था कि वसंत और रति की सहायता से मदन अपना कार्य पूरा कर सकता है । इसीलिए उन्होंने वसंत और रति का जिक्र करके उनकी सहायता लेने की आज्ञा दी ।

तपस्वी शिव को उमा के प्रति आकर्षित करना इतना आसान कार्य नहीं था । लेकिन ऐसे कठिन कार्य दूसरों के सहयोग से पूरे हो सकते हैं । इसीलिए मदन ने अपने दोस्त वसंत की सहाय्यता ली । वसंत ने भी हिमालय पर मन को लुभानेवाला वातावरण निमार्ण किया । वसंत

के कार्य से स्पष्ट होता है कि वसंत की दोस्ती और उसका सहकार्य, उसकी कार्य लगनता बेमिसाल है । इसीलिए मदन–वसंत की प्रशंसा करते हुए विश्वास के साथ कहता है –

"नन्दन वन ही लाया यहाँ उतार
बंधु ले गया मुझसे बाजीमार
त्रिभुवन में छलकता मधुमद सिन्धु
आजीवन सहकमी अपना बंधु
साध्य कठिन हो, साधन चाहे स्वल्प
पूर्ण करेगा वह मेरा संकल्प" । 22

मदन का मन विचलित न हो जाए और उनका लक्ष्य अधूरा न रह जाए, इसीलिए रति–मदन के साथ हर–पल रहती है और उनकी आत्मिक शक्ति को जागृत करके उन्हें प्रेरणा देती है । अंत में इन तीनों के सहयोग से इंद्रदेव की समस्या और सुर–समाजपर आयी आपत्ति दूर हुई । इस उलझन को सुलझता देखकर निश्चित हो जाता है कि "आपस में मिल–जुलकर रहने से और एक–दूसरे को मदद करने से समाज में एकता रहेगी । एकता के बल के आगे कोई भी कठिन कार्य पुरा करना असंभव नहीं ।

उक्त काव्य के द्वारा कविने एक शाश्वत सत्य की ओर संकेत किया है कि, "जब मानव के दिल में नफरत के बजाय प्रेम या सहयोग की भावना रहेगी तभी हम एकता के सहारे आनेवाली आपत्तियों का सामना कर सकते हैं ।

मालिकशाही और गंदी राजनीति के प्रति आक्रोश एवं विरोध :–.

कवि नागार्जुन युग की आहट को ध्यान से सुनते हैं, समझते हैं और समाज की भावनाओं को मोड भी सकते हैं । जनता पर होनेवाले प्रत्येक जुल्म से वे परिचित है और उन्होंने उनके खिलाफ अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त की हैं । स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य के साथ खिलवाड करनेवाली

शक्तियों को बेनकाब करने के लिए उन्होंने "मदन-पराजय" जैसी पुरानी कथा को चुनकर "भस्मांकुर" काव्य के द्वारा आज की मालिकशाही और गंदी राजनीति के प्रति अपनी कलम को तलवार बनाकर संघर्ष करने के लिए तैयार हुए है ।

शिव, इंद्र और कामदेव ये पौराणिक पात्र है, किंतु वे वर्तमान समाज के रुढिवादी, शोषक और शोषित व्यक्तियों के प्रतीक है । इंद्रदेव-कामदेव पर अपनी मालिकशाही का रोब जमाते हैं । वे अपनी खुषी के लिए जी चाहे वैसा कामदेव का इस्तेमाल करते हैं । शिव की तपस्या भंग करना देव-देवताओं की बस की बात नहीं थी, तो फिर उन्होंने यह उम्मीद अपने सेवक-कामदेव से कैसी रखी कि वो शिव की तपस्या भंग करेगा ? इतना जानते हुए भी उन्होंने कामदेव को मौत की मुँह में ढकले दिया । इसीसे स्पष्ट होता है कि वे अपनी आन, बाण, शान पर कोई आँच न आ पाए, इसलिए वे अपने सेवकों की जिंदगी दाव पर लगाते हैं । कामदेव जैसे स्वामिनिष्ठ सेवक अपने स्वामी की आज्ञा का पालन हर स्थिति में करते हैं । इतना ही नहीं कामदेव जैसे ईमानदार नौकर अपने मालिक के एक इशारे पर अपनी जान भी देते हैं ।

कुटिल राजनीतिज्ञ इंद्रदेव ने कामदेव को शिव की तपस्या भंग करने की आज्ञा दी । कामदेव ने रति और वसंत की सहाय्यता से शिव के मन में उमा के प्रति प्रेम उत्पन्न किया । लेकिन शिव जैसे शोषणकर्ता न कामदेव का शोषण करके उन्हें नष्ट कर दिया । कामदेव तो शिव के भले की बात सोचकर अपना कार्य कर रहा था लेकिन पत्थरदिल शिव ने कामदेव के अंतर्मन को नहीं पहचाना। उन्होंने उसे अपने रास्ते से हटा दिया ।

प्रस्तुत काव्य 'भस्मांकुर' के द्वारा कवि ने आज की गंदी राजनीति और मालिकशाही का यथार्थ चित्र खिंचा है । मालिक लोग और राजनीतिज्ञ अपने हित के लिए सामान्य जनता का शोषण करते हैं । नेता लोग अपना राजपद और खुर्सी को सहीसलामत रखने के लिए जनता को अपने वाक्चातुर्य के द्वारा गुमराह करके उन्हें झुठे आश्वासन देकर उन पर जुल्मों की ब्योंछार करते हैं । ताकि सामान्य जनता पाँच वर्षो तक उन्हीं गुंथी को सुलझाती रहें और उनका ध्यान नेताओं के कुटिल

UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

कर्मों की ओर न जाए । अगर कामदेव जैसा कोई इन्सान उनके खिलाफ आवाज उठाना चाहता है तो उसका आवाज हमेशा के लिए बंद किया जाता है । कामदेव जैसे जनसेवक को खत्म करके शिव जैसे अत्याचारी उस घटना से इतना दूर हो जाते हैं कि वे उस घटना से अपरिचित बन जाते हैं ।

यही स्थिति पूँजीपति मालिकों की है । वे अपनी दौलत को दुगुनी करने के चक्कर में अपनी इन्सानियत की भावना को भूलकर सामान्य जनता पर जुल्म–अत्याचार करते रहते हैं । वे हमेशा सामान्य जनता को गुलाम बनाने की चक्कर में रहते हैं । अपने नौकरों से दिन–रात मेहनत करवा लेते हैं लेकिन उनकी कार्यलगनता और ईमानदारी का अच्छा फल नहीं मिलता बल्कि बदले में उन्हें दु:ख ही मिलता है । इतना जुल्म सहने पर भी वे अपने फर्ज को न भूलकर ईमानदारी के साथ मालिक की वफादारी करते हैं । इतना ही नहीं वक्त आने पर कामदेव जैसे नौकर अपने स्वामी के लिए जान की बाजी तक लगाते हैं ।

निष्कर्षता हम कह सकते हैं कि नागार्जुनजी ने हमेशा अपने साहित्य का लक्ष्य मानव को ही बनाया है । उन्होंने मानव के हर पहेलू का गहन अध्ययन करके उनके प्रति अपनी आस्था दिखायी हैं । उन्होंने सामान्य जनता को जुल्म के सिंकजे से बचाने के लिएजुल्म करनेवालों के खिलाफ अपनी कलम को तलवार बनाकर उनसे संघर्ष किया है । वे चाहते हैं कि भेदभाव को मिटाकर संपूर्ण मानव जाति को समान अधिकार, स्वतंत्रता मिलें । ताकि सारा संसार सुख और शांतिमय बन जाय । इन्हीं विचार श्रृंखलाओं का प्रतीक है – 'भस्मांकुर' काव्य ।

<u>आशावादी बनने का संदेश</u> :–

सभी प्राणिमात्र का जीवन आशा पर निर्भय होता है । मायुस जिंदगी में आशा का एक ही किरण जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है । नागार्जुनजी को आशा में बडी शक्ति नजर आयी हैं । उन्होंने प्रस्तुत किया काव्य के द्वारा आशावादी बनने का संदेश दिया है ।

सुर-समाज पर आयी बला को टालने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी इंद्रदेव ने मदन पर सौंप दी । इंद्रदेव विश्वास के साथ यह आशा व्यक्त करते हैं कि, "मदन अपनी जिम्मेदारी को निभाकर शिव की तपस्या भंग करने में कामयाबी हासिल करेगा" । मदन पूरी लगन के साथ शिव की तपस्या भंग करने में जुड जाता है । वसंत की सहाय्यता और उसकी कार्य कुशलता को देखकर मदन को अब आशा लगने लगती हैं कि –

"पूरा होगा सुरपति का अभिलाष
गौरी–नन्दन, शिव का औरस पुत्र
वही करेगा तारक का संहार
सुर–समूह की चिन्ता होगी दूर
यश के भागी, हम होंगे कृतकृत्य" । 23

उमा–पार्वती शिव को पाने के लिए समाधिमग्न शिव की सेवा करने लगती है । उनकी सेवा का असर जल्द ही दिखायी देता है । शिव की तपस्या भंग हो जाती है और वे प्रेम–स्निग्ध भाव से उमा की तरफ देखने लगते हैं । लेकिन अचानक क्रोधित होकर मदन को भस्म करके एकाएक गायब हो जाते हैं । उमा की कोशिश बेकार जाती है, उसकी मनोकामना अधूरी रहती है, लेकिन वह मायुस नहीं होती । आखरी प्रसंग में कविने आशावादी दृष्टि रखीं हैं कि "उमा अपनी तपस्या और सौंदर्य के बल पर शिव को आकर्षित करेगी" ।

"तरुण तापसी का प्रशांत सौंदर्य
खींच सकेगा निश्चय अपनी ओर
महारुद्र की महिमा को इस बार ।" 24

प्रस्तुत काव्य 'भस्मांकुर' में कवि ने कामदेव और पार्वती के चरित्र के द्वारा अपने आशावादी विचार व्यक्त किए है । हम कवि के आशावादी विचारों से सहमत होकर कह सकते हैं कि जिस

इन्सान के पास कुछ उम्मीद शेष है, वह जिंदगी में कभी हार नहीं मानेगा । असफल होने पर नाराज होने के बजाय फिर से अपनी आत्मीय शक्ति के बल पर उस मंझिल को आजमाने की कोशिश करेगा । आशा ही कठिन समय में इन्सान को मदद करती हैं और सही रास्ता दिखाती हैं । इसीलिए कवि नागार्जुन ने मानव के अस्तित्व को मजबूत करने के लिए संपूर्ण मानव जाति को आशावादी बनने का संदेश दिया है ।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि नागार्जुनजीने पुरानी कथा के द्वारा पुराने रुढिवादी विचारों में बदलाव करके, आधुनिक सुधारवादी विचारों को जन--जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से "भस्मांकुर" खंडकाव्य की निर्मिती की हैं । प्रस्तुत काव्य को नागार्जुनजीने नुतन परिवेश में पेश करके ओघे विचार, रुढि, अंधविश्वासों को समूल नष्ट करने की कोशिश की हैं, और मानवता और प्रेम का समर्थन दृढता के साथ किया है । सचमुच "भस्मांकुर" काव्य उद्देश्य की दृष्टि से तथा जीवन संदेश की दृष्टि से सफल काव्य है ।

xxxxxxxxxx xxx xxxxxxxxxx

** संदर्भ सूची **

1. आधुनिक हिंदी खंडकाव्य - डॉ.एस.तंकमणि अम्मा, पृ.241
2. आधुनिक हिंदी खंडकाव्य - डॉ.एस.तंकमणि अम्मा, पृ.221
3. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.83
4. आधुनिक खंडकाव्य में युग चेतना - डॉ.पाटील, पृ.50
5. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.80
6. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.32
7. नागार्जुन : जीवन और साहित्य - डॉ.प्रकाशचंद्र भट्ट, पृ.106
8. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.42
9. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.71
10. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.73
11. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.57
12. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.47
13. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.38
14. आधुनिक खंडकाव्यों में युग चेतना - डॉ.पाटील, पृ.152
15. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.78
16. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.79
17. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.72
18. नागार्जुन : जीवन और साहित्य - डॉ.प्रकाशचंद्र भट्ट, पृ.112
19. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.54
20. नयी कविता की नाटयमुखी भूमिका - डॉ.हुकुमचंद राजपाल, पृ.241
21. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.52
22. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.46
23. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.47
24. भस्मांकुर - नागार्जुन, पृ.82